पालतू पशुओं का प्राथमिक उपचार सर्टीफिकेट पाठ्यक्रम

युवा लोगों को आय के स्रोत के रूप में पशुपालन अपनाने हेतु प्रोत्साहित करने के लिए राजुवास द्वारा कुछ सर्टिफिकेट पाठ्यक्रमों का प्रारूप तैयार किया गया। यह पाठ्यक्रम पूर्ण करने के पश्चात इच्छुक लाभार्थियों को उन्नत ज्ञान हासिल करने का अवसर प्राप्त होगा। इन सर्टिफिकेट पाठयक्रमों का प्रारूप ऐसा है कि यदि कोई भी व्यक्ति अपने फार्म पर पशुओं की आकस्मिक दुर्घटना व रोग की स्थिति में प्राथमिक उपचार व बचाव कार्य करने में सक्षम होगा। इस पाठ्यक्रम को करने हेतु न्यूनतम आठवीं कक्षा उतीर्ण होने की अनिवार्यता है।

1. **पाठ्यक्रम का नाम–पालतू पशुओं का प्राथमिक उपचार सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम**
2. **उद्देश्य**–पाठ्यक्रम का लक्ष्य पशुपालक द्वारा अपने फार्म पर पशुओं की आकस्मिक दुर्घटना व रोग की स्थिति में प्राथमिक उपचार व बचाव किया जा सके। इस पाठ्यक्रम के उद्देश्य निम्न प्रकार के हैं।
   अ. युवाओं को पशुओं की बीमारियों की जानकारी
   ब. पशुओं में विभिन्न बीमारियों से बचाव
   स. पशुओं में थनैला की रोकथाम
   द. पशुओं में बीमारी से बचाव व विभिन्न रोगों का टीकाकरण
   य. अन्तः एवं बाह्य परजीवी से बचाव
3. **प्रवेश योग्यता** – मान्यता प्राप्त बोर्ड द्वारा आठवीं कक्षा उतीर्ण अथवा समकक्ष
4. **समय अवधि** – एक माह।
5. **न्यूनतम सीट**– 5 (आवश्यकतानुसार परिवर्तित किया जा सकता है)
6. **शुल्क राशि**– 1000/– रू. प्रतिमाह
7. **पाठ्यक्रम का माध्यम** – हिन्दी
8. **परीक्षा की विधि**– संबंधित केन्द्रों पर सामान्य परीक्षा लेकर प्रशिक्षणार्थी की योग्यता जांच की जायेगी, सफल प्रशिक्षणार्थी को पाठ्यक्रम समाप्ति पर प्रमाणपत्र वितरित किये जायेंगें।
9. **प्रवेश प्रक्रिया**– विश्वविद्यालय द्वारा समाचार पत्रों, विश्वविद्यालय के प्रकाशनों, धीणे री बात्यां रेडियो कार्यक्रम व विश्वविद्यालय वेबसाइट के माध्यम से इन पाठ्यक्रमों की सूचना दी जाएगो तथा प्रत्येक पाठ्यक्रम में न्यूनतम पाँच आवेदन प्राप्त होने पर उनका पाठ्यक्रम अनुदेशक से मूल्यांकन करवा कर पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया जायेगा।
10. **अनुशासन नियमावली**– विश्वविद्यालय के नियमानुसार।
11. **संपर्क सूत्र**– डॉ. अनिल आहूजा, विभागाध्यक्ष पशु औषध विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर मो. नं. 9414230453
    डॉ. दीपिका धूड़िया, सहायक आचार्य, पशु औषध विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर मो. नं. 9413684447

12. पाठ्यक्रम– निम्नानुसार

सैद्धांतिक पाठ्यक्रम

1. नवजात पशुओं की देखभाल एवं प्रबंधन
2. बीमार पशु की देखभाल एवं स्वास्थ्य प्रबंधन
3. गाय, भैंस की विभिन्न बीमारियों की जानकारी एवं बचाव
4. भेड, बकरी, सूअर, की विभिन्न बीमारियों की जानकारी एवं बचाव
5. श्वान व बिल्ली की विभिन्न बीमारियों की जानकारी एवं बचाव
6. मुर्गियों की विभिन्न बीमारियों की जानकारी एवं बचाव
7. पशुओं से मनुष्य में फैलने वाली विभिन्न बीमारियों की जानकारी
8. थनैला रोग की जानकारी
9. पशुओं का बाह्य परजीवियों से बचाय
10. पशुओं का अन्तः परजीवियों से बचाय
11. अत्याधिक गर्म वातावरण में पशुओं का प्रबंधन एवं तापघात से बचाव
12. अत्याधिक ठण्डे तापमान में पशुओं का प्रबंधन एवं बचाव
13. वर्षा ऋतु में पशुओं की देखभाल एवं स्वास्थ्य प्रबंधन
14. पशुओं में उत्पादन रोग की जानकारी
15. पशुओं को उत्पादन रोगों से बचाय
16. पशुओं में विटामिन की कमी से होने वाले रोगों की जानकारी व बचाव
17. पशुओं में खनिज लवणों की कमी से होने वाले रोगों की जानकारी व बचाव

प्रायोगिक पाठ्यक्रम

1 स्वस्थ गाय व भैंस के लक्षण
2 स्वस्थ भेड व बकरी के लक्षण
3 स्वस्थ ऊंट व सूअर के लक्षण
4 स्वस्थ श्वान व बिल्ली के लक्षण
5 स्वस्थ मुर्गियों के लक्षण
6 बीमार पशुओं के लक्षण (गाय, भैंस)
7 बीमार पशुओं के लक्षण (भेंड, बकरी)
8 बीमार पशुओं के लक्षण (श्वान व बिल्ली)
9 बीमार पशुओं के लक्षण (ऊंट व सूअर)
10 बीमार पशुओं के लक्षण (मुर्गी)
11 जुगाली करने वले पशुओं में विभिन्न बीमारियों के बचाव हेतु टीकाकरण
12 श्वान एवं बिल्ली की विभिन्न बीमारियों के बचाव हेतु टीकाकरण
13 मुर्गी की विभिन्न बीमारियों के बचाव हेतु टीकाकरण
14 पशुओं को तापघात से बचाने के उपाय
15 पशुओं को शीत से बचाने के उपाय
16 पशुओं को अन्त परजीवी से बचाव हेतु दवा पिलाना
17 पशुओं को बाह्य परजीवी से बचाव हेतु दवा का छिड़काव (बडे पशु)